ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 40-41

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

भारत की विदेश नीति में कूटनीतिक भूमिका

ब्रजेश कुमार यादव
असिस्टेन्ट प्रोफेसर– बहादुर यादव मेमोरियल पी0जी0 कालेज, भटनी, देवरिया (उ0प्र0), भारत

Received- 21.08.2020, Revised- 24.08.2020, Accepted - 27.08.2020 E-mail: - rksharpur2@gmail.com

सारांश : *नेपालियन ने कहा था कि विदेश नीति के निर्धारण में भौगोलिक स्थिति का विशेष महत्व होता है। कि भूगोल के साथ–साथ किसी भी देश की विदेश नीति इतिहास से गहरा सम्बन्ध रखती है। भारत की विदेश नीति भी अपनी कूटनीतिज्ञता में इतिहास और स्वतंत्रता आन्दोलन से गहरा सम्बन्ध रखती है। ऐतिहासिक विरासत के रुप में भारत की विदेश नीति आज उन तथ्यों को समेटे हुए है जो कभी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से उपजे थे, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व एवं विश्व शांति का विचार हजारों वर्ष पुराने उस चिन्तन का परिणाम है, जिसे महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी एवं महात्मा गॉधी जैसे विचारकों ने प्रस्तुत किया था। इसी तरह भारत की विदेश नीति में कूटनीति के झलक के रूप में उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद तथा रंगभेदी नीति का विरोध तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में मिलती है। भारत के अधिकांश देशों के औपचारिक राजनयिक सम्बन्ध है। जनसंख्या के दृष्टि से भारत दूसरा सबसे बड़ा देश होते हुए गुटनिरपेक्ष नीति अपनाये हुए है। इसके साथ ही भारत के समस्त विश्व के साथ राजनयिक, व्यापारिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्बन्ध रहे, इसके साथ ही भारत में अनेक भागों में अनेक राजाओं तथा साम्राज्यों के उदय के साथ भारत का स्वरुप भी बदलता रहा, किन्तु वैश्विक तौर पर भारत के सम्बन्ध सदा बने रहे, सामरिक सम्बन्धों की बात की जाये तो भारत की विशेषता यही है कि वह कभी भी आक्रामक नहीं रही।*

कुंजीभूत शब्द– विदेश नीति, भौगोलिक स्थिति, कूटनीतिज्ञता, स्वतंत्रता आन्दोलन, ऐतिहासिक विरासत, शांतिपूर्ण।

प्राचीन काल में भारत की नीति– प्राचीन काल से ही भारत के विदेशों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध रहे हैं। पूरातात्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यता का सम्बन्ध अफगानिस्तान, मेसोपोटामिया, इरान, मध्य एशिया, नेपाल, चीन तथा बहरीन द्वीप के साथ आर्थिक एवं सांस्कृतिक लेन–देन रहा है। पुरातात्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि सुमेर उर, तेल, अस्मर, किश, उम्मा, निप्पूर आदि से सैन्धव कारीगरों अथवा उनके प्रभाव से निर्मित अनेक वस्तुएं जैसे षीप हड्डियों के मनके एवं मुहरें आदि प्राप्त हुई हैं। लोथल से तॉबा एवं हाथी दॉत की वस्तुएं प्राप्त होती रही हैं।

मौर्य काल में भारत विदेषों के साथ कूटनीति सम्बन्धों में अनेक परिवर्तन दिखायी देते हैं। इस समय व्यापारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक लेन–देन के साथ–साथ भारतीय राजा के दरबार में दूसरे देशों से दूत आने–जाने लगे थे।

मध्य काल में भारत की नीति– पूर्व मध्य काल के अन्त में भारत के उत्तर पश्चिम सीमा पर अनेक तुर्की आक्रमण जैसे मोहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी तथा मोहम्मद गौरी किए, गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया। मध्य काल में भारत के विदेशों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध आठवीं सदी से सोलहवीं सदी के मध्य अनेक विदेशी यात्रियों के आगमन से हुआ।

आधुनिक काल में भारत की नीति– स्वतंत्रता से पहले भारत के विदेशी सम्बन्ध मुख्य रुप से ब्रिटेन से थी जो ब्रिटिस हितों के अनुकूल थे, इसमें भारत के हितों की कोई गुंजाईश नहीं थी, इससे स्पष्ट होता है कि भारत के बिना किसी विचार विमर्श के ही उसे प्रथम विश्व युद्ध में शामिल युद्ध के अन्तिम चरण में धीरे–धीरे भारत के विदेशी मामलों में विचार–विमर्श होने लगा। अगस्त 1917 में मांटेम्यू घोषणा के द्वारा भारत में एक उत्तरदायी सरकार की स्थापना को ब्रिटेन सरकार के लक्ष्य के रुप में स्वीकारा गया। सन् 1917 से 1918 के बीच होने वाले युद्ध सम्मेलनों में भी भारत में भाग लिया। तथा भारत राष्ट्र संघ का मूल सदस्य 1920 में बना।

विदेश नीति के सामने वर्तमान चुनौतियॉ– राष्ट्रीय हित के मामले तथा विदेश नीति के मूल उद्देश्य पर आजादी के बाद से अभी तक समूचे राजनीतिक वर्ग का एक समान मत रहा है। छोटे या लम्बे समय में सम्भावित लाभों के मुताविक परिवर्तन किये गये हैं, किन्तु मई 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सत्ता सीन होने के बाद से विदेश नीति में विस्तार, तरीकों तथा घटकों में परिवर्तन हुआ है। इसके परिणामों से कुछ लोग असहमत हो सकते हैं, किन्तु परिवर्तन सामने दिखायी दे रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने इण्डिया 'फर्स्ट' को सागरर्मिता

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

तरीके से विदेश नीति का प्रभावी उद्देश्य बना दिया और अपने शपथ ग्रहण समारोह में दक्षेस नेताओं को नेवता देवकर पड़ोस को प्राथमिकता देते हुए सम्पर्क आरम्भ किया। जिसे कई पर्यवेक्षकों ने उत्कृष्ट, असाधारण और आवश्यक शुरूआत का नाम दिया। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के अनुसार 170 से अधिक विदेशी प्रतिनिधियों के साथ इस दौरान बात–चीत की गयी। क्षेत्रीय तथा वैश्विक मामलों में और अधिक प्रभाव डालने की कोशिश की गयी भारत जैसे देशों के लिए अहम है कि उसे पड़ोसी देशों से हयोग मिलता रहे और कोई रास्ता ही नहीं है, क्योंकि कोई भी अपना पड़ोसी चुन नहीं सकता। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा सद्भावना भरी कूटनीति दिखायी जाने अथवा बहुचर्चित सर्जिक स्ट्राईक या आतंकवाद पर नोटबंदी कथित असर होने के बावजूद पाकिस्तान में और हमारे किये हैं। चीन भी हर मुश्किल में उसका दोस्ता बना रहा है और वैश्विक चिंताओं को नजर अंदाज कर हर परिस्थिति में पाकिस्तान का साथ देता रहा है। हमारे अन्य पड़ोसी भी अक्सर क्षेत्रीय ताकतों विशेष कर चीन से अधिक से अधिक लाभ लेने के लिए दांव खेलते रहते हैं, उनके राष्ट्रीय हितों के लिहाज से देखा जाय तो ऐसी अस्थिर कूटनीति समझ में आती है, लेकिन इसके फेर में हमारी सुरक्षा तथा राष्ट्रीय हितों से समझौता हेा जाता है। इस उपक्षेत्र में भारत का दबा कर रखने अथवा नीचा दिखाने की इच्छा वाली किसी प्रमुख शक्ति से पार पाये वगैर हमारा कोई भी पड़ोसी इस तरह अवज्ञा नहीं कर सकता है।

विदेश नीति के मामले में भारत की सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं होगी कि अपने पड़ोसियों तथा आसियान एवं पश्चिम एशिया समेत दूरवर्ती पड़ोसियों को किस तरह संभाला जाय, बल्कि विश्व की प्रमुख शक्तियों के साथ अपने सम्बन्धों को दुरुस्त करना भी चुनौती होगी। क्योंकि वे शक्तियॉ अपना–अपना प्रभाव जमाने के लिए होड़ करती रहती हैं तथा किसी न किसी के जरिये यहकाम करना चाहती हैं, जबकि इतने बड़े आकार आर्थिक संसाधन, मानव संसाधन तथा रणनीति लाभ के कारण तथा ऐसी भूमिका में नहीं हो सकता। ऐसी परिस्थितियों में कोई अपने सिर पर मडराते साया से छुटकारा कैसे पाये। जब तक चीन भारत सम्बन्ध है तो प्रत्यक्ष तौरपर सब कुछ सहयोग प्रतिस्पर्द्धा का नमूना बन रहा है। जैसे चीन की अपनी वित्तीय सैन्य ताकत हमारी विदेश नीति के उद्देश्यों में बाधक बन रही है। चीन की स्ट्रींग ऑफ पर्ल रणनीति चीन के लिए सटीक है। चीन इसी ताक में भारत की तरफ देख रहा और रूस जैसे भारत के पारम्परिक्त साझेदारों को दूर ले जाने की कोशिश कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ के सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के हमारे प्रयासों को भी विफल कर रहा है। चीन–पाकिस्तान रूस के बीच कुछ समय पहले हुई बैठकें तथा भारतीय सैन्य प्रतिष्ठानों पर आतंकी हमाले होने के बावजूद रूस पाकिस्तान सैनय अभ्यास इसका उदाहरण है। वैसे अमेरिका और रूस की सहायता से भारत के अनेक उद्योगों की स्थापना तथा सैन्य व्यवस्था सुदृढ़ हुई, परन्तु इनकी अपनी महत्वाकांक्ष है। हम भारत, अमेरिका, जापान त्रिपक्षीय संवाद के साथ सम्पर्क और भी बढ़ाना चाहते हैं। जिससे पाकिस्तान के साथ उनकी नजदीकी कम हो सके।

इस प्रकार भारत का विदेशों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध रहा है और समय–समय पर इसके सामने अनेक चुनौतियॉ आती रही हैं, जिसका सामना सफलता पूर्वक भारत करते हुए आगे बढ़ रहा है और इसकी विदेश नीति में समय–समय पर परिवर्तन होते रहैं, जो विकास के द्योतक हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इन साक्लोपीड़िया भारत के वैदेशिक सम्बन्ध।
2. श्रीवास्तव, के0सी0 प्राचीन भारत का इतिहास तथा सांस्कृतिक, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद 1991 पृष्ठ–59, 136, 137.
3. वही पृ0–220, 232–33.
4. व्ही पृ0–339–50.
5. प्रकाश, ओम, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास विकास प्रकाश दिल्ली 2001, पृ0–87–88.
6. वही पृ0–170–77.
7. चन्द सतीश, मध्यकालीन भारत (1206–1526) जवाहर पब्लिसर्स एवं हिस्ट्रील्यूरर्स, नई दिल्ली 2001 पृ0–5–15.
8. वर्मा हरिश्चन्द्र मध्यकालीन भारत (750–1540).,
11. जैन, भीतल, प्रमुख राष्ट्रों के विदेश नीतियॉ रितू पब्लिकेसंस, जयपुर –2011 पृ0 72–206.
12. इंडिया टूडे, 17 सितम्बर 2014 पृ0–12–13.
13. वही ।
14. विदेश नीति की चुनौती आन लाइन इन साईक्लोपीडिया।
15. वही ।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*